इतिहास से सबक

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

द हिन्दू

15 नवम्बर, 2021

शी जिनपिंग के नेतृत्व में चीन अपनी राजनीति में एक बड़े दीर्घकालिक बदलाव की तैयारी कर रहा है।

पिछले हफ्ते अपनी केन्द्रीय समिति की बैठक के बाद, चीन की कम्युनिस्ट पार्टी ने पिछली शताब्दी में पार्टी की प्रमुख उपलब्धियों और ऐतिहासिक अनुभव पर एक संकल्प पारित किया।

जाहिर तौर पर अतीत के बारे में यह संकल्प चीन के भविष्य के लिए बहुत महत्व रखता है। इतिहास पर पार्टी द्वारा अपने 100 साल के इतिहास में पारित किया गया यह केवल तीसरा ऐसा प्रस्ताव है। 1945 में माओत्से तुंग और 1981 में देंग जियाओपिंग द्वारा पारित पिछले दो प्रस्तावों ने चीन की राजनीति में महत्वपूर्ण परिवर्तन बिंदुओं को चिह्नित किया, और उन्हें अपनी-अपनी पीढ़ियों के प्रमुख नेताओं के रूप में स्थापित किया।

नवीनतम प्रस्ताव का पूरा पाठ सार्वजनिक नहीं किया गया है, लेकिन चार दिवसीय कार्यक्रम के समापन के बाद जारी किया गया 5,000 शब्द का विज्ञप्ति एक समझ तो प्रदान कर ही देता है। यह माओ, देंग और वर्तमान नेता शी जिनपिंग के योगदान की प्रशंसा करता है। यह 1981 के पिछले प्रस्ताव से एक महत्वपूर्ण पहलू में भिन्न है, जिसमें माओ की उन गलतियों को स्वीकार किया गया था जिसके कारण सांस्कृतिक क्रांति (1966-1976) हुई। यह तीसरा प्रस्ताव पार्टी के इतिहास को दोषों के बिना एक ऐतिहासिक मार्गदर्शक के रूप में वर्णित करते हुए कहता है कि पिछली सदी में पार्टी के प्रयासों को देखते हुए, यह अनुमान लगाया जा सकता है कि हम अतीत में क्यों सफल रहे और हम भविष्य में कैसे सफल हो सकते हैं।

यह बताते हुए कि पार्टी ने एक नए ऐतिहासिक प्रस्ताव की आवश्यकता को क्यों देखा, विज्ञप्ति में कहा गया है कि "केंद्रीय पार्टी नेतृत्व राजनीतिक अखंडता बनाए रखने, बड़े परिदृश्य के संदर्भ में सोचने, नेतृत्व के मूल का पालन करने और सरेखण में रहने की आवश्यकता के बारे में हमारी चेतना को मजबूत करना चाहती है।"

नवीनतम विज्ञप्ति ने सामूहिक नेतृत्व मॉडल की परोक्ष रूप से आलोचना की गयी है जिसको देंग ने अपने उत्तराधिकारियों को विरासत में दिया और सत्ता के तीन शांतिपूर्ण हस्तांतरण को सक्षम किया। शी जिंगपिंग के "मूल" नेतृत्व की प्रशंसा करते हुए कहा गया है कि "उन्होंने कई कठिन समस्याओं को हल किया...जो पहले कभी भी हल नहीं की जा सकी थी और कई चीजों को पूरा किया जो कि पहले सभी करना चाहते थे लेकिन कभी नहीं किया"। इसने "केन्द्रीय समिति और पार्टी में शी जिनपिंग की मूल स्थिति को दृढ़ता से बनाए रखने ... और केंद्रीय समिति के अधिकार को बनाए रखने... को सुनिश्चित करने के लिए कहा कि सभी पार्टी सदस्य एक साथ कार्य करें"। 1945 और 1981 के प्रस्तावों का महत्व अतीत पर उनके प्रतिबिंबों में नहीं है, बल्कि यह है कि वे चीन के भविष्य के लिए नाटकीय परिणाम लाते हुए सत्ता के प्रयोग को कैसे बदलेंगे।

पहले माओ की विचारधारा को पार्टी की मार्गदर्शक विचारधारा के रूप में स्थापित किया। ऐसा करके उसने माओ से सवाल करना विधर्म बना दिया और उसके विनाशकारी व्यक्तित्व पंथ के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया।

1981 में, देंग ने भी अपना प्रभुत्व स्थापित किया लेकिन उसने विचारधारा द्वारा शासन को समाप्त करने के लिए अपनी शक्ति का उपयोग नही किया, इसके बजाय पार्टी का ध्यान विकास की ओर लगाया और चीन को उसके सुधार और खुलेपन के युग में लाया। अब, देंग के 40 साल बाद, जैसा कि चीन के वर्तमान नेता पार्टी के इतिहास में अपनी जगह लिखना चाहते हैं, उनके द्वारा अतीत को सम्मान में रखा जा सकता है, लेकिन इसे भविष्य की रूपरेखा को निर्धारित करने की अनुमति नहीं दी जाएगी जब देश एक और राजनीतिक मोड़ लेने की तैयारी कर रहा है।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

प्र. चीन में कम्युनिस्ट पार्टी के अभी तक दो घोषणा पत्र (प्रस्ताव) रखे गए है, इनमें से पहला प्रस्ताव किस वर्ष लाया गया था?

(a) 1945

(b) 1946

(c) 1948

(d) 1949

Expected Question (Prelims Exams)

Q. So far, two manifestos (proposals) of the Communist Party have been placed in China, the first of which was introduced in which year?

(a) 1945

(b) 1946

(c) 1948

(d) 1949

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्र. शी जिनपिंग की चीन में मजबूत होती स्थिति चीन के भविष्य के साथ-साथ भारत पर भी प्रभाव डाल सकती है? चर्चा करें। (250 शब्द)

Q. Xi Jinping's strengthening position in China can affect the future of China as well as India. Discuss. (250 Words)

नोट :- अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रख कर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्त्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।